पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-10

Hindi

Specimen Copy

June-July

2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	जून	गद्य पाठ-११- डायरी के पन्ने	सीताराम सेकसरिया
०२		पद्य पाठ-२- मीरा के पद	मीराबाई
०३		संचयन-२-सपनों के से दिन	गुरदयाल सिंह
०४		व्याकरण-वाक्य लेखन—पत्र- चित्र-लेखन	
०५	जुलाई	पद्य पाठ-३-दोहे	बिहारी
०६		गद्य पाठ-१२-तनतारा -वमिरो	लीलाधर मंडलोई
०७		गद्य-पाठ-१३-तीसरी कसम	प्रहलाद अग्रवाल
०८		व्याकरण-उपसर्ग-प्रत्यय संवाद-लेखन	

पद्य-पाठ-2-मीरा के पद

*कवि मीराबाई -

जन्म -1 5 0 3 (जोधपुर , चोकड़ी गांव)

मृत्यु -1 5 4 6

*मीरा के पद पाठ सार-

इन पदों में मीराबाई श्री कृष्ण का भक्तों के प्रति प्रेम और अपना श्री कृष्ण के प्रति भक्ति - भाव का वर्णन करती है। पहले पद में मीरा श्री कृष्ण से कहती हैं कि जिस प्रकार आपने द्रोपदी ,प्रह्लाद और ऐरावत के दुखों को दूर किया था उसी तरह मेरे भी सारे दुखों का नाश कर दो। दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहती , वह श्री कृष्ण की दासी बनाने को तैयार है ,बाग़ -बगीचे लगाने को भी तैयार है ,गली गली में श्री कृष्ण की लीलाओं का बखान भी करना चाहती है ,ऊँचे ऊँचे महल भी बनाना चाहती है , ताकि दर्शन का एक भी मौका न चुके|

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।
बूढतो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीर।

प्रसंग :- प्रस्तुत पाठ हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा है। इसमें कवयित्री भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम को दर्शा रही हैं और स्वयं की रक्षा की गुहार लगा रही है|

व्याख्या -: इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा उदाहरण देते हुए कहती हैं कि जिस तरह आपने द्रोपदी की इज्जत को बचाया और साडी के कपडे को बढ़ाते चले गए ,जिस तरह आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का शरीर धारण कर लिया और जिस तरह आपने हाथियों के राजा भगवान इंद्र के वाहन ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के चंगुल से बचाया था ,हे ! श्री कृष्ण उसी तरह अपनी इस दासी अर्थात भक्त के भी सारे दुःख हर लो अर्थात सभी दुखों का नाश कर दो।

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसन पास्यूँ, सुमरन पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बनावँ बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ ,पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण ,दीज्यो जमनाजी रे तीरा।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

प्रसंग -: प्रस्तुत पद हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इस पद की कवयित्री मीरा है। इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम का वर्णन कर रही है और श्री कृष्ण के दर्शन के लिए वह कितनी व्याकुल है यह दर्शा रही है।

व्याख्या -: इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे !श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फिर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। मीरा कहती हैं कि नौकर बनकर मैं बागीचा लगाउंगी ताकि सुबह उठ कर रोज आपके दर्शन पा सकूँ। मीरा कहती हैं कि वृन्दावन की संकरी गलियों में मैं अपने स्वामी की लीलाओं का बखान करुँगी। मीरा का मानना है कि नौकर बनकर उन्हें तीन फायदे होंगे पहला - उन्हें हमेशा कृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा- उन्हें अपने प्रिय की याद नहीं सताएगी और तीसरा- उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा। मीरा श्री कृष्ण के रूप का बखान करते हुए कहती हैं कि उन्होंने पीले वस्त्र धारण किये हुए हैं ,सर पर मोर के पंखों का मुकुट विराजमान है और गले में वैजन्ती फूल की माला को धारण किया हुआ है। वृन्दावन में गाय चराते हुए जब वह मोहन मुरली बजाता है तो सबका मन मोह लेता है। मीरा कहती है कि मैं बगीचों के बिच ही ऊँचे ऊँचे महल बनाउंगी और कुसुम्बी साड़ी पहन कर अपने प्रिय के दर्शन करुँगी अर्थात श्री कृष्ण के दर्शन के लिए साज श्रृंगार करुँगी। मीरा कहती हैं कि हे !मेरे प्रभु गिरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लिए इतना बेचैन है कि वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के किनारे उसे दर्शन दे दें|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

१-मीरा आधी रात को श्री कृष्ण को कहाँ पर मिलना चाहती है ?

(a) अपने घर पर

(b) घर की छत पर

(c) यमुना के तट पर

(d) मंदिर में

२- मीरा हर रोज़ सुबह उठ के किसके दर्शन करना चाहती है ?

(a) श्री राम के

(b) अपने पति के

(c) श्री कृष्ण के

(d) पिता के

३- मीरा के काव्य की कितनी कृतियाँ उपलब्ध हैं ?

(a) सात – आठ

(b) सात -दस

(c) चार – पांच

(d) कोई नहीं

४- मीरा श्री कृष्ण के दर्शन किस रंग की साड़ी पहन कर करना चाहती है ?

(a) लाल रंग

(b) योगी रंग

(c) कुसुम्बी रंग

(d) रंग बिरंगी

५- मीरा श्री कृष्ण के पास रहने के कौन से फायदे बताती है ?

(a) उसे हमेशा दर्शन प्राप्त होंगे

(b) उसे श्री कृष्ण को याद करने की जरूरत नहीं होगी

(c) उसकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा।

(d) सभी

६- मीरा के भक्ति भाव का सम्राज्य कैसे बढ़ेगा ?

(a) मीरा के कृष्ण के पास रहने से

(b) मीरा के नृत्य करने से

(c) मीरा के गली गली घूमने से

(d) मीरा के दोहे लिखने से

७-"बूढतो गजराज राख्यो , काटी कुंजर पीर |" पंक्ति पर भाव प्रकट करें |

(a) जैसे अपने ऐरावत को मगरमच्छ से बचाया

(b) जैसे आपने इंद्र को मगरमच्छ से बचाया

(c) जैसे आपने भगवान् को मगरमच्छ से बचाया

(d) सभी

८- मीरा श्री कृष्ण को पाने के लिए क्या क्या करने को तैयार है ?

(a) बाग बगीचे लगाने को

(b) ऊंचे महल बनवाने को

(c) दासी बनने को

(d) सभी

९- मीराबाई ने श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

(a) पीताम्बर मनमोहक के रूप में

(b) पीताम्बर जनमोहक के रूप में

(c) पीताम्बर के रूप में

(d) किसी रूप में नहीं

१०- किसको बचाने के लिए श्री कृष्ण ने नृसिंह का रूप धारण किया था ?

(a) भक्त प्रह्लाद

(b) भक्त ऐरावत

(c) भक्त अहलावत

(d) सभी

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1.पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तर-पहले पद में मीरा ने अपनी पीड़ा हरने की विनती इस प्रकार की है कि हे ईश्वर! जैसे आपने द्रौपदी की लाज रखी थी, गजराज को मगरमच्छ रूपी मृत्यु के मुख से बचाया था तथा भक्त प्रहलाद की रक्षा करने के लिए ही आपने नृसिंह अवतार लिया था, उसी तरह मुझे भी सांसारिक संतापों से मुक्ति दिलाते हुए अपने चरणों में जगह दीजिए।

प्रश्न 2.दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मीरा श्री कृष्ण को सर्वस्व समर्पित कर चुकी हैं इसलिए वे केवल कृष्ण के लिए ही कार्य करना चाहती हैं। श्री कृष्ण की समीपता व दर्शन हेतु उनकी दासी बनना चाहती हैं। वे चाहती हैं दासी बनकर श्री कृष्ण के लिए बाग लगाएँ उन्हें वहाँ विहार करते हुए देखकर दर्शन सुख प्राप्त करें। वृंदावन की कुंज गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं। इस प्रकार दासी के रूप में दर्शन, नाम स्मरण और भाव-भक्ति रूपी जागीर प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।

प्रश्न 3.मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर-मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का अलौकिक वर्णन किया है कि उन्होंने पीतांबर (पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं, जो उनकी शोभा को बढ़ा रहे हैं। मुकुट में मोर पंख पहने हुए हैं तथा गले में वैजयंती माला पहनी हुई है, जो उनके सौंदर्य में चार चाँद लगा रही है। वे ग्वाल-बालों के साथ गाय चराते हुए मुरली बजा रहे हैं।

प्रश्न 4.मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-मीराबाई ने अपने पदों में ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती आदि भाषाओं का प्रयोग किया गया है। भाषा अत्यंत सहज और सुबोध है। शब्द चयन भावानुकूल है। भाषा में कोमलता, मधुरता और सरसता के गुण विद्यमान हैं। अपनी प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने अत्यंत भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है। भक्ति भाव के कारण शांत रस प्रमुख है तथा प्रसाद गुण की भावाभिव्यक्ति हुई है। मीराबाई श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका हैं। वे अपने आराध्य देव से अपनी पीड़ा का हरण करने की विनती कर रही हैं। इसमें कृष्ण के प्रति श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के भाव की अभिव्यंजना हुई है। मीराबाई की भाषा में अनेक अलंकारों जैसे अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, उदाहरण आदि अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 5.वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उत्तर-मीरा श्रीकृष्ण को पाने के लिए उनकी चाकर (नौकर) बनकर चाकरी करना चाहती हैं अर्थात् उनकी सेवा करना चाहती हैं। वे उनके लिए बाग लगाकर माली बनने तथा अर्धरात्रि में यमुना-तट पर कृष्ण से मिलने व वृंदावन की कुंज-गलियों में घूम-घूमकर गोविंद की लीला का गुणगान करने को तैयार हैं।

*-निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.

हरि आप हरो जन री भीर ।

द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।

भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

उत्तर-

काव्य-सौंदर्य-

भाव-सौंदर्य – हे कृष्ण! आप अपने भक्तों की पीड़ा को दूर करो। जिस प्रकार आपने चीर बढ़ाकर द्रोपदी की लाज रखी, व नरसिंह रूप धारण कर भक्त प्रहलाद की पीड़ा (दर्द) को दूर किया, उसी प्रकार आप हमारी परेशानी को भी दूर करो। आप पर पीड़ा को दूर करने वाले हो।

शिल्प-सौंदर्य-

भाषा – गुजराती मिश्रित राजस्थानी भाषा

अलंकार – उदाहरण अलंकार

छंद – "पद"

रस – भक्ति रस

प्रश्न 2.बूढतो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर ।

दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर ।

उत्तर-भाव पक्ष-प्रस्तुत पंक्तियों में मीराबाई अपने आराध्य श्रीकृष्ण का भक्तवत्सल रूप दर्शा रही हैं। इसके

अनुसार श्रीकृष्ण
ने संकट में फँसे डूबते हुए ऐरावत हाथी को मगरमच्छ से मुक्त करवाया था। इसी प्रसंग में वे अपनी रक्षा के लिए भी श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं।

कला पक्ष

१ राजस्थानी, गुजराती व ब्रज भाषा का प्रयोग है।
२ भाषा अत्यंत सहज वे सुबोध है।
३ तत्सम और तद्भव शब्दों का सुंदर मिश्रण है।
४ दास्यभाव तथा शांत रस की प्रधानता है।
५ भाषा में प्रवाहत्मकता और संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है।
६ सरल शब्दों में भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।
७ दृष्टांत अलंकार का प्रयोग है।
८ 'काटी कुण्जर' में अनुप्रास अलंकार है।

गद्य-पाठ- डायरी का एक पन्ना

*-लेखक परिचय

लेखक - सीताराम सेकसरिया

जन्म - 1892 (राजस्थान -नवलगढ़)

मृत्यु - 1982

*पाठ सार-

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की इच्छा रखने वाले महान इंसानों में से एक थे। वह दिन -प्रतिदिन जो भी देखते थे ,सुनते थे और महसूस करते थे ,उसे अपनी एक निजी डायरी में लिखते रहते थे।इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लिखा था।

लेखक कहते हैं कि 26 जनवरी 1931 का दिन हमेशा याद रखा जाने वाला दिन है। 26 जनवरी1930 के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और 26 जनवरी 1931 को भी फिर से वही दोहराया जाना था,जिसके लिए बहुत सी तैयारियाँ पहले से ही की जा चुकी थी। सिर्फ़ इस दिन को मानाने के प्रचार में ही दो हज़ार रूपये खर्च हुए थे। सभी मकानों पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे उन्हें स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे।पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ पुरे शहर में पहरे लिए घूम -घूम कर प्रदर्शन कर रही थी।न जाने कितनी गाड़ियाँ शहर भर में घुमाई जा रही थी। घुड़सवारों का भी प्रबंध किया गया था।स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए परन्तु वे पार्क के अंदर ही ना जा सके। वहां पर भी काफी मारपीट हुई और दो -चार आदमियों के सर फट गए।मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी ,मदालसा बजाज -नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़कियों को उत्सव का मतलब समझाया।दो -तीन बाजे पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।जिनमें मुख्य कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे। सुभाष बाबू के जुलूस की पूरी ज़िम्मेवारी पूर्णोदास पर थी उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे| अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर

पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज 26 जनवरी 1931 तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। एक ओर पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। अगर किसी भी तरह से किसी ने सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकाला गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था।ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की और निकले।जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ी। परन्तु फिर भी सुभाष बाबू बहुत ज़ोर से वन्दे -मातरम बोलते जा रहे थे।इस तरफ इस तरह का माहौलथा और दूसरी तरफ स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी।

स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी।सुभाष बाबू को भी पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई।पुलिस बीच -बीच में लाठियाँ चलना शुरू कर देती थी। इस बार भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते -आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वहीँ मोड़ पर बैठ गई।उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया।मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गिरफ़्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ़्तार नहीं किया गया था। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खिंचवा रहे थे। उस समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे। इतना सबकुछ पहले कभी नहीं हुआ था ,लोगों का ऐसा प्रचंड रूप पहले किसी ने नहीं देखा था। बंगाल या कलकत्ता के नाम पर कलंक था की यहाँ स्वतंत्रता का कोई काम नहीं हो रहा है। आज ये कलंका काफी हद तक धूल गया और लोग ये सोचने लगे कि यहाँ पर भी स्वतंत्रता के विषय में काम किया जा सकता है।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- इस कहानी के लेखक कौन हैं ?

A) सीताराम

B) सेकसरिया

C) सीताराम सेकसरिया

D) कोई नहीं

Q2- सीताराम सेकसरिया का जन्म कब हुआ ?

A) १८९२ में

B) १८९१ में

C) १८९० में

D) कोई नहीं

Q3- सीताराम सेकसरिया का जन्म कहाँ हुआ था ?

A) राजस्थान के नवलगढ़ में

B) राजस्थान के चूरू में

C) राजस्थान के सीरत में

D) कोई नहीं ।

Q4- लेखक ने पढ़ना लिखना बिना स्कूल गए कैसे सीखा ?

A) स्वध्याय से

B) गुरु से

C) माता पिता से

D) कोई नहीं

Q5- लेखक को पदम श्री से कब सम्मानित किया गया ?

A) १९६२ में

B) १९६१ में

C) १९७१ में

D) कोई नहीं

Q6- डायरी का पन्ना कहानी कब लिखी गई ?

A) २६ जनवरी १९३१ को

B) २६ जनवरी १९३२

C) २६ जनवरी १९३३

D) कोई नहीं

Q7- लेखक की प्रमुख रचनाओं के नाम बताएं |

A) मन की बात

B) नई याद

C) एक कार्यकर्त्ता की डायरी

D) सभी

Q8- लेखक की भाषा पर दूसरी कौन सी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है ?

A) बांग्ला

B) कन्नड़

C) तेलगू

D) सभी

Q9- लेखक ने तत्सम और तदभव शब्दों के साथ कौन से शब्दों का प्रयोग किया है ?

A) देशज

B) विदेशी

C) अलंकारित

D) सभी

Q10- लेखक की रचनाओं में किस शैली का अधिक प्रयोग हुआ है ?

A) आत्मकथात्मक

B) अलंकारित

C) उपमायुक्त

D) सभी

*-प्रश्नोत्तर-

(क)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25 -30 शब्दों में लिखिए-

प्रश्न 1 -: 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या -क्या तैयारियाँ की गईं ?

उत्तर :-26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए काफ़ी तैयारियाँ की गयी थीं। केवल प्रचार पर ही दो हज़ार रूपए खर्च किये गए थे। कार्यकर्ताओं को उनका कार्य घर -घर जा कर समझाया गया था। कलकत्ता शहर में जगह -जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस निकाले जा रहे थे और झंडा फहराया जा रहा था। टोलियाँ बना कर लोगो की भीड़ उस स्मारक के नीचे इकठ्ठी होने लगी थी ,जहाँ सुभाष बाबू झंडा फहराने वाले थे और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने वाले थे।

प्रश्न 2 -: 'आज जो बात थी ,वह निराली थी '- किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: आज का दिन निराला इसलिए था क्योंकि आज के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इस साल भी फिर से वही दोहराया जाना था। सभी मकानों पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे हमें

स्वतंत्रता मिल गई हो। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

प्रश्न 3 -: पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर है ?

उत्तर :-पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। यदि कोई सभा में जाता है तो उसे दोषी समझा जायेगा। कौंसिल की ओर से नोटिस निकला था कि स्मारक के निचे ठीक चार बजकर चैबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। इस तरह दोनों नोटिस एक दूसरे के विरुद्ध थे|

प्रश्न 4 -: धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया ?

उत्तर :-जब सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की और चल पड़ी परन्तु पुलिस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया ,कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ पहले तो वहीँ धर्मतल्ले के मोड़ पर ही बैठ गई। बाद में उन्हें पुलिस पकड़ कर ले गई। इस कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आ कर जुलूस टूट गया।

प्रश्न 5 -: डॉ .दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे ,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की क्या वजह हो सकती थी ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-डॉ .दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे ,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की दो वजह हो सकती थी। एक तो यह कि अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलासा किया जा सकता था कि किस तरह उन्होंने औरतो तक को नहीं छोड़ा। दूसरी वजह यह हो सकती है कि बंगाल या कलकत्ता पर जो कलंक था कि वहाँ स्वतंत्रताके लिए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलंक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित किया जा सकता था कि वहाँ भी बहुत काम हो रहा है के लिए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलंक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित किया जा सकता था कि वहाँ भी बहुत काम हो रहा है|

(ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50 -60 शब्दों में) दीजिए-

प्रश्न 1 -: सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?

उत्तर :-सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की बहुत महत्पूर्ण भूमिका थी। स्त्रियों ने बहुत तैयारियां की थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी

हुई थी। स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी।सुभाष बाबू की गिरफ़्तारी के कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी।। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते -आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वही मोड़ पर बैठ गई। उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गिरफ़्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था|

प्रश्न 2 -: जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ?

उत्तर :-जब सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की और चल पड़ी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई। परन्तु पुलिस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया, कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ वहीं धर्मतल्ले केमोड़ पर बैठ गई।भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। कुछ के सर फ़टे थे और खून बह रहा था|

प्रश्न 3 -: 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन ज़ोर किस के द्वारा लागू किये गए कानून को भंग करने की बात कही गई है ? क्या कानून भंग करना उचित था ? पाठ के सन्दर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर :-यहाँ पर अंग्रेज प्रशासन द्वारा सभा ना करने के कानून को भंग करने की बात कही है। ये कानून वास्तव में भारत वासियों की स्वतंत्रता को कुचलने वाला कानून था अतः इस कानून का उलंघन करना सही था। उस समय हर देशवासी स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार था और अंग्रेजी हुकूमत ने सभा करने ,झंडा फहराने और जुलूस में शामिल होने को गैरकानूनी घोषित कर दिया था। अंग्रेजी प्रशासन नहीं चाहता था कि लोगो में आज़ादी की भावना आये परन्तु अब हर देशवासी स्वतन्त्र होना चाहता था। उस समय कानून का उलंघन करना सही था।

प्रश्न 4 -:बहुत से लोग घायल हुए,बहुतों को लॉकअप में रखा गया ,बहुत सी स्त्रियाँ जेल गई ,फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार से यह सब अपूर्व क्यों है ?अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :-सुभाष बाबू के नेतृत्व में कलकत्ता में लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मानाने की ऐसी तैयारियाँ की थी जैसी आज से पहले कभी नहीं हुई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी सभा में नहीं जायेगा यदि कोई जाता है तो उसे दोषी समझा जाएगा। परन्तु लोगो ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपनी तैयारियों में लागे रहे। पुलिस की लाठियों से कई लोग घायल हुए ,कई लोगों को गिरफ्तार किया गया। स्त्रियों पर भी बहुत अत्याचार हुए ,इतिहास में कभी इतनी स्त्रियों को एक साथ गिरफ्तार नहीं किया गया था। इन्हीं बातों के कारण इस दिन को अपूर्व बताया गया।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(1) आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। वह आज बहुत अंश में धूल गया।

उत्तर :-कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे। जिस भी रास्तों पर मनुष्यों का आना - जाना था, वहीं जोश ,ख़ुशी और नया पन महसूस होता था।बड़े -बड़े पार्कों और मैदानो को सवेरे से ही पुलिस ने घेर रखा था क्योंकि वही पर सभाएँ और समारोह होना था। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बाबजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी।। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक अमुक धारा-के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं।लोगो की भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। आदमियों के सर फट गए। पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी।इतना सब कुछ होने पर भी लोगो के सहस और जोश में कमी नहीं आई।

(2) खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

उत्तर जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज :- तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक अमुक धारा - के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। जो लोग भी काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सुचना दे दी गई थी अगर उन्होंने किसी भी तरह से सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकल गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। प्रशासन को इस तरह से खुली चुनौती दे कर कभी पहले इस तरह की कोई सभा नहीं हुई थी|

संचयन-पाठ-२-सपनों के से दिन

*लेखक - गुरदयाल सिंह

जन्म - 10 जनवरी 1933

पाठ सार-

लेखक कहता है कि उसके बचपन में उसके साथ खेलने वाले बच्चों का हाल भी उसी की तरह होता था। सभी के पाँव नंगे, फटी-मैली सी कच्छी और कई जगह से फटे कुर्ते , जिनके बटन टूटे हुए होते थे और सभी के बाल बिखरे हुए होते थे। जब सभी खेल कर, धूल से लिपटे हुए, कई जगह से पाँव में छाले लिए, घुटने और टखने के बीच का टाँग के पीछे माँस वाले भाग पर खून के ऊपर जमी हुई रेत-मिट्टी से लथपथ पिंडलियाँ ले कर अपने-अपने घर जाते तो सभी की माँ-बहनें उन पर तरस नहीं खाती बल्कि उल्टा और ज्यादा पीट देतीं। कई बच्चों के पिता तो इतने गुस्से वाले होते कि जब बच्चे को पीटना शुरू करते तो यह भी ध्यान नहीं रखते कि छोटे बच्चे के नाक-मुँह से लहू बहने लगा है और ये भी नहीं पूछते कि उसे चोट कहाँ लगी है। परन्तु इतनी बुरी पिटाई होने पर भी दूसरे दिन सभी बच्चे फिर से खेलने के लिए चले आते। लेखक कहता है कि यह बात लेखक को तब समझ आई जब लेखक स्कूल अध्यापक बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहा था। वहाँ लेखक ने बच्चों के मन के विज्ञान का विषय पढ़ा था।

लेखक कहता है कि कुछ परिवार के बच्चे तो स्कूल ही नहीं जाते थे और जो कभी गए भी, पढाई में रूचि न होने के कारण किसी दिन बस्ता तालाब में फेंक आए और उनके माँ-बाप ने भी उनको स्कूल भेजने के लिए कोई जबरदस्ती नहीं की। यहाँ तक की राशन की दुकान वाला और जो किसानों की फसलों को खरीदते और बेचते हैं वे भी अपने बच्चों को स्कूल भेजना जरुरी नहीं समझते थे। वे कहते थे कि जब उनका बच्चा थोड़ा बड़ा हो जायगा तो पंडत घनश्याम दास से हिसाब-किताब लिखने की पंजाबी प्राचीन लिपि पढ़वाकर सीखा देंगे और दुकान पर खाता लिखवाने लगा देंगे|

लेखक कहता है कि बचपन में किसी को भी स्कूल के उस कमरे में बैठ कर पढ़ाई करना किसी कैद से कम नहीं लगता था। बचपन में घास ज्यादा हरी और फूलों की सुगंध बहुत ज्यादा मन को लुभाने वाली लगती है। लेखक कहता है की उस समय स्कूल की छोटी क्यारियों में फूल भी कई

तरह के उगाए जाते थे जिनमें गुलाब, गेंदा और मोतिया की दूध-सी सफ़ेद कलियाँ भी हुआ करतीं थीं। ये कलियाँ इतनी सूंदर और खुशबूदार होती थीं कि लेखक और उनके साथी चपरासी कभी कुछ फूल तोड़ लिया करते थे। परन्तु लेखक को अब यह याद नहीं कि फिर उन फूलों का वे क्या करते थे। लेखक कहता है कि शायद वे उन फूलों को या तो जेब में डाल लेते होंगे और माँ उसे धोने के समय निकालकर बाहर फेंक देती होगी या लेखक और उनके साथी खुद ही, स्कूल से बाहर आते समय उन्हें बकरी के मेमनों की तरह खा या 'चर' जाया करते होगें।

लेखक कहता है कि उसके समय में स्कूलों में, साल के शुरू में एक-डेढ़ महीना ही पढ़ाई हुआ करती थी, फिर डेढ़-दो महीने की छुटियाँ शुरू हो जाती थी। हर साल ही छुटियों में लेखक अपनी माँ के साथ अपनी नानी के घर चले जाता था। वहाँ नानी खूब दूध-दहीं, मक्खन खिलाती, बहुत ज्यादा प्यार करती थी। दोपहर तक तो लेखक और उनके साथी उस तालाब में नहाते फिर नानी से जो उनका जी करता वह माँगकर खाने लगते। लेखक कहता है कि जिस साल वह नानी के घर नहीं जा पाता था, उस साल लेखक अपने घर से दूर जो तालाब था वहाँ जाया करता था।लेखक और उसके साथी कपड़े उतार कर पानी में कूद जाते, फिर पानी से निकलकर भागते हुए एक रेतीले टीले पर जाकर रेत के ऊपर लोटने लगते फिर गीले शरीर को गर्म रेत से खूब लथपथ करके फिर उसी किसी ऊँची जगह जाकर वहाँ से तालाब में छलाँग लगा देते थे। लेखक कहता है कि उसे यह याद नहीं है कि वे इस तरह दौड़ना, रेत में लोटना और फिर दौड़ कर तालाब में कूद जाने का सिलसिला पाँच-दस बार करते थे या पंद्रह-बीस बार।लेखक कहता है कि जैसे-जैसे उनकी छुट्टियों के दिन ख़त्म होने लगते तो वे लोग दिन गिनने शुरू कर देते थे। डर के कारण लेखक और उसके साथी खेल-कूद के साथ-साथ तालाब में नहाना भी भूल जाते। अध्यापकों ने जो काम छुट्टियों में करने के लिए दिया होता था, उसको कैसे करना है इस बारे में सोचने लगते। काम न किया होने के कारण स्कूल में होने वाली पिटाई का डर अब और ज्यादा बढ़ने लगता। लेखक बताता है कि उसके कितने ही सहपाठी ऐसे भी होते थे जो छुट्टियों का काम करने के बजाय अध्यापकों की पिटाई अधिक 'सस्ता सौदा' समझते। ऐसे समय में लेखक और उसके साथी का सबसे बड़ा 'नेता' ओमा हुआ करता था। ओमा की बातें, गालियाँ और उसकी मार-पिटाई का ढंग सभी से बहुत अलग था। वह देखने में भी सभी से बहुत अलग था। उसका मटके के जितना बड़ा सिर था, जो उसके चार बालिश्त)ढ़ाई फुट (के छोटे कद के शरीर पर ऐसा लगता था जैसे बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा हो। बड़े सिर पर नारियल जैसी आँखों वाला उसका चेहरा बंदरिया के बच्चे जैसा और

भी अजीब लगता था। जब भी लड़ाई होती थी तो वह अपनेहाथ-पाँव का प्रयोग नहीं करता था, वह अपने सिर से ही लड़ाई किया करता था।

लेखक कहता है कि वह जिस स्कूल में पढता था वह स्कूल बहुत छोटा था। उसमें केवल छोटे-छोटे नौ कमरे थे, जो अंग्रेजी के अक्षर एच)H) की तरह बने हुए थे। दाईं ओर का पहला कमरा हेडमास्टर श्री मदनमोहन शर्मा जी का था। स्कूल की प्रेयर)प्रार्थना (के समय वह बाहर आते थे और सीधी पंक्तियों में कद के अनुसार खड़े लड़कों को देखकर उनके गोरा चेहरे पर ख़ुशी साफ़ ही दिखाई देती थी। मास्टर प्रीतम चंद जो स्कूल के 'पीटी' थे, वे लड़कों की पंक्तियों के पीछे खड़े-खड़े यह देखते रहते थे कि कौन सा लड़का पंक्ति में ठीक से नहीं खड़ा है। उनकी धमकी भरी डाँट तथा लात-घुस्से के डर से लेखक और लेखक के साथी पंक्ति के पहले और आखरी लड़के का ध्यान रखते, सीधी पंक्ति में बने रहने की पूरी कोशिश करते थे। मास्टर प्रीतम चंद बहुत ही सख्त अध्यापक थे। परन्तु हेडमास्टर शर्मा जी उनके बिलकुल उलट स्वभाव के थे। वह पाँचवीं और आठवीं कक्षा को अंग्रेजी स्वयं पढ़ाया करते थे। किसी को भी याद नहीं था कि पाँचवी कक्षा में कभी भी उन्होंने हेडमास्टर शर्मा जी को किसी गलती के कारण किसी को मारते या डाँटते देखा या सूना हो। लेखक कहता है कि बचपन में स्कूल जाना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता था परन्तु एक-दो कारणों के कारण कभी-कभी स्कूल जाना अच्छा भी लगने लगता था। मास्टर प्रीतमसिंह जब परेड करवाते और मुँह में सीटी ले कर लेफ्ट-राइट की आवाज़ निकालते हुए मार्च करवाया करते थे। फिर जब वे राइट टर्न या लेफ्ट टार्न या अबाऊट टर्न कहते तो सभी विद्यार्थी अपने छोटे-छोटे जूतों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर जूतों की ठक-ठक करते और ऐसे घमंड के साथ चलते जैसे वे सभी विद्यार्थी न हो कर, बहुत महत्वपूर्ण 'आदमी' हों, जैसे किसी देश का फौज़ी जवान होता है । स्काउटिंग करते हुए कोई भी विद्यार्थी कोई गलती न करता तो पीटी साहब अपनी चमकीली आँखें हलके से झपकाते और सभी को शाबाश कहते। उनकी एक शाबाश लेखक और उसके साथियों को ऐसे लगने लगती जैसे उन्होंने किसी फ़ौज के सभी पदक या मैडल जीत लिए हों।

लेखक कहता है कि हर साल जब वह अगली कक्षा में प्रवेश करता तो उसे पुरानी पुस्तकें मिला करतीं थी। उसके स्कूल के हेडमास्टर शर्मा जी एक धनि घर के लड़के को उसके घर जा कर पढ़ाया करते थे। हर साल अप्रैल में जब पढ़ाई का नया साल आरम्भ होता था तो शर्मा जी उस लड़के की एक साल पुरानी पुस्तकें लेखक के लिए ले आते थे। लेखक के घर में किसी को भी पढ़ाई में कोई रूचि नहीं थी। यदि नयी किताबें लानी पड़तीं तो शायद इसी बहाने लेखक की पढ़ाई तीसरी-चौथी कक्षा में ही छूट जाती।

लेखक कहता है कि जब लेखक स्कूल में था तब दूसरे विश्व युद्ध का समय था। लोगो को फ़ौज में भर्ती करने के लिए जब कुछ अफसर गाँव में आते तो उनके साथ कुछ नौटंकी वाले भी आया करते थे|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- सपनो के से दिन के लेखक कौन हैं ?

A) मिथिलेश्वर

B) रही मासूम

C) गुरदयाल सिंह

D) कोई नहीं

Q2- स्कूल के पी टी सर का क्या नाम था ?

A) मास्टर प्रीतम चंद

B) हरीश चंद

C) मुकुंद लाल

D) कोई नहीं

Q3- मास्टर प्रीतम चंद कतारों के पीछे खड़े खड़े क्या देखते थे ?

A) लड़कों को

B) कौन सा लड़का कतार में ठीक से नहीं खड़ा

C) कोई नहीं

D) कता

Q4- लड़के किसके डर से कतार खड़े रहते ?

A) मास्टर प्रीतम चंद की घुड़की के डर से

B) मार के डर से

C) कोई नहीं

D) घुड़की के डर से

Q5- पी. टी सर कौन से मुहावरे को प्रत्यक्ष कर दिखाते थे ?

A) खाल खींचन

B) खाल झाड़न

C) कान मरोड़ने

D) कोई नहीं

Q6- पी. टी सर खाल खींचने के मुहावरे को कब प्रत्यक्ष दिखाते थे ?

A) जब कोई लड़का अपना सर हिलाता

B) ज ब कोई लड़का पिंडली खुजलाता

C) कोई नहीं

D) दोनों

Q7- अब किस दंड पर पूरी तरह प्रतिबंध है ?

(A)मानसिक

B) कोई भी दंड

C) शारीरिक दंड

D) कोई नहीं

Q8- इस पाठ के माध्यम से लेखक ने किन दिनों का वर्णन किया है ?

A) आज़ादी के दिनों का

B) अंग्रेजो के दिनों का

C) अपने स्कूल के दिनों का

D) कोई नहीं

Q9- बच्चों को स्कूल में अपनी पढ़ाई से अधिक क्या अच्छा लगता है ?

A) कंप्यूटर क्लास

B) जिम

C) अपने साथिओं के साथ खेलना

D) कोई नहीं

Q10- हैड मास्टर लड़के की किताबे क्यों लाकर देते थे ?

A) उसे पढ़ने का शौंक था

B) किताबे इकठी करने का शौंक था

C) लेखक के परिवार की आर्थिक स्तिथि अच्छी नहीं थी

D) कोई नहीं

*- प्रश्न-अभ्यास-

प्रश्न 1.कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती-पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

उत्तर-कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती, यह पाठ के इस अंश से सिद्ध होता है

हमारे आधे से अधिक साथी राजस्थान तथा हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करते थे। जब वे छोटे थे तो उनकी बोली हमें बहुत कम समझ आती थी, इसलिए उनके कुछ शब्द सुन कर हमें हँसी आती थी, लेकिन खेलते समय सभी एक-दूसरे की बात समझ लेते। इससे सिद्ध हो जाता है कि कोई भाषा आपसी व्यवहार में बाधक नहीं होती|

प्रश्न 2.पीटी साहब की 'शाबाश' फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-पीटी साहब प्रीतमचंद बहुत कड़क इनसान थे। उन्हें किसी ने न हँसते देखा न किसी की प्रशंसा करते। सभी छात्र उनसे भयभीत रहते थे। वे मार-मारकर बच्चों की चमड़ी तक उधेड़ देते थे। छोटे-छोटे बच्चे यदि थोड़ा-सा भी अनुशासन भंग करते तो वे उन्हें कठोर सजा देते थे। ऐसे कठोर स्वभाव वाले पीटी साहब बच्चों के द्वारा गलती न करने पर अपनी चमकीली आँखें हल्के से झपकाते हुए उन्हें शाबाश कहते थे। उनकी यह शाबाश बच्चों को फौज़ के सारे तमगों को जीतने के समान लगती थी।

प्रश्न 3.नई श्रेणी में जाने और नई कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक को बालमन क्यों उदास हो उठता था?
उत्तर-नयी श्रेणी में जाकर लेखक का बालमन इसलिए उदास हो जाता था, क्योंकि उसे किताबें अन्य लड़कों द्वारा पढ़ीहुई ही पढ़नी पड़ती थीं। उसके लिए पुरानी किताबों का प्रबंध हेडमास्टर साहब कर देते थे, क्योंकि लेखक के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, जबकि अन्य बच्चे नई कक्षा में नई किताबें खरीदते थे। लेखक का बालमन नई कापियों तथा पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से उदास हो उठता था।

प्रश्न 4.स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था?
उत्तर-लेखक गुरदयाल सिंह फौज़ी बनना चाहता था। उसने फुल बूट और शानदार वर्दी पहने लेफ्ट-राइट करते फौज़ी जवानों की परेड को देखा था। इसी कारण स्काउट परेड के समय धोबी की धुली वर्दी, पालिश किए बूट तथा जुराबों को पहन वह स्वयं को फौज़ी जवान ही समझता था। स्काउट परेड में जब पीटी मास्टर लेफ्ट राइट की आवाज या मुँह की सीटी बजाकर मार्च करवाया करते थे तथा उनके राइट टर्न या लेफ्ट टर्न या अबाऊट टर्न कहने पर लेखक अपने छोटे-छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एक कदम पीछे मुड़कर बूटों की ठक-ठक की आवाज़ करते हुए स्वयं को विद्यार्थी न समझकर एक महत्त्वपूर्ण फौजी समझने लगता था।

प्रश्न 5.हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?
उत्तर-पीटी साहब चौथी कक्षा को फ़ारसी भी पढ़ाते थे। एक दिन बच्चे उनके द्वारा दिया गया शब्द-रूप रट

कर नहीं आए। इस पर उन्होंने बच्चों को पीठ ऊँची करके क्रूरतापूर्ण ढंग से मुर्गा बनने का आदेश दिया, तो उस समय वहाँ हेडमास्टर साहब आ गए। यह दृश्य देखकर हेडमास्टर उत्तेजित हो उठे। इसी कारण उन्होंने पीटी साहब को मुअत्तल कर दिया|

प्रश्न 6.लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?
उत्तर-'सपनों के-से दिन' पाठ के लेखक गुरदयाल सिंह के अनुसार उन्हें तथा उनके साथियों को बचपन में स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। चौथी कक्षा तक कुछ लड़के को छोड़कर अन्य सभी साथी रोते

चिल्लाते हुए स्कूल जाया करते थे। स्कूल में धोबी पिटाई तथा मास्टरों की डाँट-फटकार के कारण स्कूल उन्हें एक नीरस व भयानक स्थान प्रतीत होता था, जिसके प्रति उनके मन में एक भय-सी बैठ गया था|इसके बावजूद कई बार ऐसी स्थितियाँ आती थीं जब उन्हें स्कूल जाना अच्छा भी लगता था। यह मौका तब आता था जब उनके पीटी सर स्काउटिंग का अभ्यास करवाते थे। वे पढ़ाई-लिखाई के स्थान पर लड़कों के हाथों में नीली-पीली झंडियाँ पकड़ा देते थे, वे वन-टू-श्री करके इन झंड़ियों को ऊपर-नीचे करवाते थे। हवा में लहराती यह झंडिया बड़ी अच्छी लगती थीं। अच्छा काम करने पर पीटी सर की शाबाशी भी मिलती थी, तब यही कठोर पीटी सर बच्चों को बड़े अच्छे लगते थे। ऐसे अवसर पर स्कूल आना अच्छा व सुखद प्रतीत होता था।

प्रश्न 7.लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टयों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?
उत्तर-लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाया करता था। जैसे-हिसाब के मास्टर जी द्वारा दिए गए 200 सवालों को पूरा करने के लिए रोज़ दस सवाल निकाले जाने पर 20 दिन में पूरे हो जाएँगे, लेकिन खेल-कूद में छुट्टियाँ भागने लगतीं, तो मास्टर जी की पिटाई का डर सताने लगता। फिर लेखक रोज़ के 15 सवाल पूरे करने की योजना बनाता, तब उसे छुट्टियाँ भी बहुत कम लगने लगतीं और दिन बहुत छोटे लगने लगते तथा स्कूल का भय भी बढ़ने लगता। ऐसे में लेखक पिटाई से डरने के बावजूद भी उन लोगों की भाँति बहादुर बनने की कल्पना करने लगता, जो छुट्टियों को काम पूरा करने की बजाय मास्टर जी से पिटना ही अधिक बेहतर समझते थे।

प्रश्न 9.विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।
उत्तर-विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई युक्तियाँ इस प्रकार से हैं—पीटी साहब बिल्ला

मार-मारकर बच्चों की चमड़ी तक उधेड़ देते थे। तीसरी-चौथी कक्षाओं के बच्चों से थोड़ा-सा भी अनुशासन भंग हो जाता, तो उन्हें कठोर सज़ा मिलती थी ताकि वे विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन की नींव दृढ़ बना सकें। इसके साथ-साथ विद्यार्थियों को प्रोत्साहित तथा उत्साहित करने के लिए उन्हें 'शाबाशी' भी दी जाती थी। लेकिन वर्तमान में स्वीकृत मान्यताएँ इसके विपरीत हैं। शिक्षकों को आज विद्यार्थियों को पीटने का अधिकार नहीं है इसलिए विद्यार्थी निडर होकर अनुशासनहीनता की ओर बढ़ रहे हैं, क्योंकि आज पहले की भाँति विद्यार्थी शिक्षकों से डरते नहीं हैं। इसके लिए विद्यालय और माता-पिता दोनों जिम्मेवार हैं। बच्चों में अनुशासन का विकास करने के लिए उन्हें शारीरिक व मानासिक यातनादेना उचित नहीं। उन्हें प्रेमपूर्वक नैतिक मूल्य सिखाए जाने चाहिए, जिनसे उनमें स्वानुशासन का विकास हो सके।

प्रश्न 10.बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए।

उत्तर-बचपन की और विशेषकर स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादें मन को गुदगुदाती रहती हैं। ये यादें सभी की निजी होती हैं। मेरी भी कुछ ऐसी यादें मेरे साथ हैं। मैं जब नवीं कक्षा में पढ़ती थी मेरी माँ किसी कारणवश बाहर गई थीं। इसलिए मैं बिना गृहकार्य किए और बिना लंच लिए स्कूल पहुँची। पहले तो अध्यापिका से खूब डॉट पड़ी, फिर आधी छुट्टी में मुझे अध्यापिका ने खिड़की के पास खड़ा पाया तो डॉट लगा दी। अगले पीरियड में मुझे बहुत बेचैनी हुई कि अध्यापिका मेरे बारे में क्या सोच रही होंगी, मैं अध्यापिका कक्ष में उनसे मिलने गई। उन्हें देखते ही मेरा रोना छूट गया। उन्होंने रोने का कारण पूछा तो मैंने रोते-रोते उन्हें कारण बताया कि मेरी माता जी घर पर नहीं हैं। उन्होंने मुझे सांत्वना दी फिर मुझे अपने डिब्बे से खाना खिलाया। आज भी मैं इस घटना को याद करती हूँ तो अध्यापिका के प्रति भाव-विभोर हो उठती हूँ।

---

*-व्याकरण-

वर्णों के जोड़ से शब्द बनते है –सही शब्दों के जोड़ से वाक्य बनता है|
वाक्य के अंग

(1) उद्देश्य
(2) विधेय

(1) उद्देश्य- जैसे → वैशाली कपड़े धो रही थी |
दमयंती ने खाना बनाया |

→ वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं |
→ उद्देश्य के अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार आता है |

(2) विधेय →

जैसे → रोहन झगड़ रहा था |
राधा सितार बजा रही है |

(वाक्य के भेद)

(1) अर्थ के आधार पर
(2) रचना के आधार पर

(1) विधानवाचक वाक्य
(2) निषेधवाचक वाक्य
(3) विस्मयवाचक वाक्य
(4) संदेहवाचक वाक्य
(5) आज्ञावाचक वाक्य
(6) संकेतवाचक वाक्य
(7) इच्छावाचक वाक्य
(8) प्रश्नवाचक वाक्य

(1) विधानवाचक वाक्य→

→ जिस वाक्य में किसी बात या कार्य के होने या करने का सामान्य कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते है |

जैसे → वेदांत विद्यालय जा रहा है ।

→ बलवीर ने भाषण दिया ।

(2) निषेधवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में क्रिया के करने या होने का निषेध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं ।

जैसे → मैं बाजार नहीं जाऊँगा ।

→ मोहन घूमने नहीं जा रहा ।

(3) आज्ञावाचक वाक्य→

जिस वाक्य से आज्ञा, अनुमति, विनय या अनुरोध का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं ।

जैसे → कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए ।

तुम अंदर जाकर पढ़ाई करो

(4) प्रश्नवाचक वाक्य→

जिन वाक्यों द्वारा प्रश्न करने का भाव प्रकट होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं ।

जैसे → राहुल को किसने डाँट दिया ?

आपको किससे मिलना है ?

(5) इच्छावाचक वाक्य→

जिस वाक्यों से इच्छा, आशीर्वाद, कामना, शुभकामना आदि का भाव प्रकट होता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं ।

जैसे → (1) आपकी यात्रा मंगलमय हो ।

(2) ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दे ।

(6) संदेहवाचक वाक्य→

ऐसे वाक्य जिनसे कार्य के होने या न होने के प्रति संदेह या संभावना प्रकट होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं ।

जैसे → (1) शायद कल वर्षा हो जाए ।

(2) लगता है आज बारिश होगी ।

(7) संकेतवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं ।

जैसे → (1) पानी न बरसता, तो धान सूख जाता ।

(2) यदि पेड़ लगाएँगे, तो वायु शुद्ध होगी ।

(8) विस्मयवाचक वाक्य →

जिस वाक्य से हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, आदि भावों का बोध होता है, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं |जैसे → (1) बाप रे ! इतना मोटा चूहा |

(2) वाह ! कितनी सुंदर फुलवारी है |

2.वाक्य के प्रकार:-

सरल वाक्य

संयुक्त वाक्य

मिश्रित वाक्य

(1) सरल वाक्य →

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं |

जैसे → राम ने रावण को मारा

उद्देश्य = राम ने

विधेय = रावण को मारा |

अमित खाना खा रहा है |

उद्देश्य = अमित

विधेय = खाना खा रहा है |

(2) संयुक्त वाक्य →

जिस वाक्य में दो-या-दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजक या समुच्चयबोधक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं |

उदाहरण

(1) हमने फिल्म का टिकट खरीदा और सिनेमा हॉल चले गए |

(2) पिताजी बाजार गए और हमारे लिए मिठाई लाए |

(3) मिश्रित वाक्य →

जिस वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य इस प्रकार जुड़े हो कि उनमें एक प्रधान उपवाक्य तथा अन्य आश्रित उपवाक्य हों | उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं |

जैसे → वेदांत ने कहाँ कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

प्रधान उपवाक्य = वेदांत ने कहाँ

आश्रित उपवाक्य = कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

(2) वे सफल होते हैं जो परिश्रम करते है |

प्रधान उपवाक्य = वे सफल होते हैं

आश्रित उपवाक्य = जो परिश्रम करते है |

रचना के आधार पर वाक्यों में परिवर्तन

*-सरल वाक्य

चाय या कॉफी में से कोई पी लेंगे ।

माँ ने गोलू को डाँटकर सुलाया ।

*-संयुक्त वाक्य

चाय पी लेंगे या कॉफी पी लेंगे

माँ ने गोलू को डाँटा और सुला दिया

*-सरल वाक्य

लापरवाह मजदूर छत से गिर गया ।

ईमानदार व्यक्ति का सभी आदर करते हैं ।

*-मिश्र वाक्य

जो मज़दूर लापरवाह था, वह छत से गिर गया ।

जो व्यक्ति ईमानदार होता है, सभी उसका आदर करते हैं ।

*-संयुक्त वाक्य

शालू आई और पढ़ने लगी ।

घबराओ मत और कविता सुनाओ ।

*-सरल वाक्य

शालू आकर पढ़ने लगी ।

बिना घबराए कविता सुनाओ ।

(संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य)

संयुक्त वाक्य

घंटी बज गई और बच्चे कक्षा में जाने लगे ।

राधा आई तो रेखा चली गई ।

मिश्र वाक्य

जब घंटी बजी तब बच्चे कक्षा में जाने लगे ।

जब राधा आई तब रेखा चली गई ।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य

(1) कक्षा में अध्यापक आते ही सभी शांत हो गए । (सरल वाक्य)

कक्षा में अध्यापक आए और सभी शांत हो गए । (संयुक्त वाक्य)

जैसे ही कक्षा में अध्यापक आए वैसे ही सब शांत हो गए। (मिश्र वाक्य)

(2) माँ के आते ही दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (सरल वाक्य)

माँ आई और दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (संयुक्त वाक्य)

ज्यों ही माँ आई दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (मिश्र वाक्य)

-*सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन-:

(1)सरल वाक्य- अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।

संयुक्त वाक्य- वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।

(2)सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

(3)सरल वाक्य- गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।

संयुक्त वाक्य- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

(4)सरल वाक्य- पैसा साध्य न होकर साधन है।

संयुक्त वाक्य- पैसा साध्य नहीं है, किन्तु साधन है।

(5)सरल वाक्य- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदर-सत्कार होता है।

संयुक्त वाक्य- उसमें गुण थे, इसलिए उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था।

(6)सरल वाक्य- दोनों में से कोई काम पूरा नहीं हुआ।

संयुक्त वाक्य- न एक काम पूरा हुआ न दूसरा।

(7) सरल वाक्य- पंगु होने के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

संयुक्त वाक्य- वह पंगु है इसलिए घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

(8) सरल वाक्य- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

संयुक्त वाक्य- परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।

(9) सरल वाक्य- रमेश दण्ड के भय से झूठ बोलता रहा।

संयुक्त वाक्य- रमेश को दण्ड का भय था, इसलिए वह झूठ बोलता रहा।

(10) सरल वाक्य- वह खाना खाकर सो गया।

संयुक्त वाक्य- उसने खाना खाया और सो गया।

(11) सरल वाक्य- उसने गलत काम करके अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य- उसने गलत काम किया और अपयश कमाया।

*-संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन-

(1)संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।
सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

(2)संयुक्त वाक्य- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे।
सरल वाक्य- जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे।

(3)संयुक्त वाक्य- वह धनी है पर लोग ऐसा नहीं समझते।
सरल वाक्य- लोग उसे धनी नहीं समझते।

(4)संयुक्त वाक्य- वह अमीर है फिर भी सुखी नहीं है।
सरल वाक्य- वह अमीर होने पर भी सुखी नहीं है।

(5)संयुक्त वाक्य- बाँस और बाँसुरी दोनों नहीं रहेंगे।
सरल वाक्य- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(6)संयुक्त वाक्य- राजकुमार ने भाई को मार डाला और स्वयं राजा बन गया।
सरल वाक्य- भाई को मारकर राजकुमार राजा बन गया।

*-सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1)सरल वाक्य- उसने अपने मित्र का पुस्तकालय खरीदा।
मिश्र वाक्य- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मित्र का था।

(2)सरल वाक्य- अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।
मिश्र वाक्य- जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते हैं।

(3)सरल वाक्य- लोकप्रिय कवि का सम्मान सभी करते हैं।
मिश्र वाक्य- जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

(4)सरल वाक्य- लड़के ने अपना दोष मान लिया।
मिश्र वाक्य- लड़के ने माना कि दोष उसका है।

(5)सरल वाक्य- राम मुझसे घर आने को कहता है।
मिश्र वाक्य- राम मुझसे कहता है कि मेरे घर आओ।

(6)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ खेलूँ।

(7)सरल वाक्य- आप अपनी समस्या बताएँ।
मिश्र वाक्य- आप बताएँ कि आपकी समस्या क्या है ?

(8)सरल वाक्य- मुझे पुरस्कार मिलने की आशा है।
मिश्र वाक्य- आशा है कि मुझे पुरस्कार मिलेगा।

(9)सरल वाक्य- महेश सेना में भर्ती होने योग्य नहीं है।
मिश्र वाक्य- महेश इस योग्य नहीं है कि सेना में भर्ती हो सके।

(10)सरल वाक्य- राम के आने पर मोहन जाएगा।
मिश्र वाक्य- जब राम जाएगा तब मोहन आएगा।

(11)सरल वाक्य- मेरे बैठने की जगह कहाँ है ?
मिश्र वाक्य- वह जगह कहाँ है जहाँ मैं बैठूँ ?

(12)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ व्यापार करूँ।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष घोषित किया।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे बताओ कि तुम्हारा जन्म कब और कहाँ हुआ था।
सरल वाक्य- तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।

(3)मिश्र वाक्य- जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।
सरल वाक्य- परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।

(4)मिश्र वाक्य- ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही घण्टा बजा।
सरल वाक्य- मेरे वहाँ पहुँचते ही घण्टा बजा।

(5)मिश्र वाक्य- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा।
सरल वाक्य- पानी न बरसने पर सूखा पड़ जाएगा।

(6)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष बताया।

(7)मिश्र वाक्य- यह निश्चित नहीं है कि वह कब आएगा?
सरल वाक्य- उसके आने का समय निश्चित नहीं है।

(8)मिश्र वाक्य- जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा।
सरल वाक्य- तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा।

(9)मिश्र वाक्य- जहाँ राम रहता है वहीं श्याम भी रहता है।
सरल वाक्य- राम और श्याम साथ ही रहते हैं।

(10)मिश्र वाक्य- आशा है कि वह साफ बच जाएगा।
सरल वाक्य- उसके साफ बच जाने की आशा है।

*- संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1) संयुक्त वाक्य- सूर्य निकला और कमल खिल गए।
मिश्र वाक्य- जब सूर्य निकला, तो कमल खिल गए।

(2) संयुक्त वाक्य- छुट्टी की घंटी बजी और सब छात्र भाग गए।
मिश्र वाक्य- जब छुट्टी की घंटी बजी, तब सब छात्र भाग गए।

(3)संयुक्त वाक्य- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा।
मिश्र वाक्य- यदि काम पूरा नहीं करोगे तो जुर्माना होगा।

(4)संयुक्त वाक्य- इस समय सर्दी है इसलिए कोट पहन लो।
मिश्र वाक्य- क्योंकि इस समय सर्दी है, इसलिए कोट पहन लो।

(5)संयुक्त वाक्य- वह मरणासन्न था, इसलिए मैंने उसे क्षमा कर दिया।
मिश्र वाक्य- मैंने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह मरणासन्न था।

(6)संयुक्त वाक्य- वक्त निकल जाता है पर बात याद रहती है।
मिश्र वाक्य- भले ही वक्त निकल जाता है, फिर भी बात याद रहती है।

(7)संयुक्त वाक्य- जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो बस चली जाएगी।
मिश्र वाक्य- यदि जल्दी तैयार नहीं होओगे तो बस चली जाएगी।

(8)संयुक्त वाक्य- इसकी तलाशी लो और घड़ी मिल जाएगी।
मिश्र वाक्य- यदि इसकी तलाशी लोगे तो घड़ी मिल जाएगी।

(9)संयुक्त वाक्य- सुरेश या तो स्वयं आएगा या तार भेजेगा।
मिश्र वाक्य- यदि सुरेश स्वयं न आया तो तार भेजेगा।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- वह उस स्कूल में पढ़ा जो उसके गाँव के निकट था।
संयुक्त वाक्य- वह स्कूल में पढ़ा और वह स्कूल उसके गाँव के निकट था।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे वह पुस्तक मिल गई है जो खो गई थी।
संयुक्त वाक्य- वह पुस्तक खो गई थी परन्तु मुझे मिल गई है।

(3)मिश्र वाक्य- जैसे ही उसे तार मिला वह घर से चल पड़ा।
संयुक्त वाक्य- उसे तार मिला और वह तुरन्त घर से चल पड़ा।

(4)मिश्र वाक्य- काम समाप्त हो जाए तो जा सकते हो।
संयुक्त वाक्य- काम समाप्त करो और जाओ।

(5)मिश्र वाक्य- मुझे विश्वास है कि दोष तुम्हारा है।
संयुक्त वाक्य- दोष तुम्हारा है और इसका मुझे विश्वास है।

(6)मिश्र वाक्य- आश्चर्य है कि वह हार गया।
संयुक्त वाक्य- वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है।

(7)मिश्र वाक्य- जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
संयुक्त वाक्य- जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा।

*-अर्थ की दृष्टि से वाक्य में परिवर्तन

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हम पढ़ चुके हैं। उनका भी रूपान्तरण हो सकता है। एक वाक्य का उदाहरण देखिए-
विधानवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।
निषेधवाचक- अनुपमा पुस्तक नहीं पढ़ेगी।
प्रश्नवाचक- क्या अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी ?
विस्मयवाचक- अरे! अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।
आज्ञावाचक- अनुपमा, पुस्तक पढ़ो।
इच्छावाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ती होगी।
संकेतवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़े तो .....

विधिवाचक से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)विधिवाचक वाक्य- वह मुझसे बड़ा है।
निषेधवाचक- मैं उससे बड़ा नहीं हूँ।

(2)विधिवाचक वाक्य- अपने देश के लिए हरएक भारतीय अपनी जान देगा।
निषेधवाचक वाक्य- अपने देश के लिए कौन भारतीय अपनी जान न देगा ?

*-विधानवाचक वाक्य से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) विधानवाचक वाक्य- यह प्रस्ताव सभी को मान्य है।
निषेधवाचक- इस प्रस्ताव के विरोधाभास में कोई नहीं है।

(2) विधानवाचक वाक्य- तुम असफल हो जाओगे।
निषेधवाचक- तुम सफल नहीं हो पाओगे।

(3) विधानवाचक वाक्य- शेरशाह सूरी एक बहादुर बादशाह था।
निषेधवाचक- शेरशाह सूरी से बहादुर कोई बादशाह नहीं था।

(4) विधानवाचक वाक्य- रमेश सुरेश से बड़ा है।
निषेधवाचक- रमेश सुरेश से छोटा नहीं है।

(5) विधानवाचक वाक्य- शेर गुफा के अन्दर रहता है।
निषेधवाचक- शेर गुफा के बाहर नहीं रहता है।

(6) विधानवाचक वाक्य- मुझे सन्देह हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।
निषेधवाचक- मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।

(7) विधानवाचक वाक्य- मुगल शासकों में अकबर श्रेष्ठा था।
निषेधवाचक- मुगल शासकों में अकबर से बढ़कर कोई नहीं था।

*-निश्चयवाचक वाक्य से प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) निश्चयवाचक- आपका भाई यहाँ नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- आपका भाई कहाँ है ?

(2) निश्चयवाचक- किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।
प्रश्नवाचक- किस पर भरोसा किया जाए ?

(3) निश्चयवाचक- गाँधीजी का नाम सबने सुन रखा है।
प्रश्नवाचक- गाँधीजी का नाम किसने नहीं सुना?

(4) निश्चयवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास नहीं हैं।
प्रश्नवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास कहाँ है?

(5) निश्चयवाचक- तुम किसी न किसी तरह उत्तीर्ण हो गए।
प्रश्नवाचक- तुम कैसे उत्तीर्ण हो गए?

(6) निश्चयवाचक- अब तुम बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो।
प्रश्नवाचक- क्या तुम अब बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो?

(7) निश्चयवाचक- यह एक अनुकरणीय उदाहरण है।
प्रश्नवाचक- क्या यह अनुकरणीय उदाहरण नहीं हैं?

*-विस्मयादिबोधक वाक्य से विधानवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)विस्मयादिबोधक- वाह! कितना सुन्दर नगर है!
विधानवाचक वाक्य- बहुत ही सुन्दर नगर है!

(2) विस्मयादिबोधक- काश! मैं जवान होता।
विधानवाचक वाक्य- मैं चाहता हूँ कि मैं जवान होता।

(3) विस्मयादिबोधक- अरे! तुम फेल हो गए।
विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे फेल होने से आश्चर्य हो रहा है।

(4) विस्मयादिबोधक- ओ हो! तुम खूब आए।
विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे आगमन से अपार ख़ुशी है।

(5) विस्मयादिबोधक- कितना क्रूर!
विधानवाचक वाक्य- वह अत्यन्त क्रूर है।

(6) विस्मयादिबोधक- क्या! मैं भूल कर रहा हूँ!
विधानवाचक वाक्य- मैं तो भूल नहीं कर रहा।

(7) विस्मयादिबोधक- हाँ हाँ! सब ठीक है।
विधानवाचक वाक्य- मैं अपनी बात का अनुमोदन करता हूँ।